पढ़ो, समझो और गाओ :

८. हम चलते सीना तान के

–डॉ. हरिवंशराय बच्चन

जन्म : २७ नवंबर १९०७, इलाहाबाद (उ.प्र.) **मृत्यु :** १८ जनवरी २००३ **रचनाएँ :** मधुशाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, दस द्वार से सोपान तक, नीड़ का निर्माण फिर आदि । **परिचय :** बच्चन जी हिंदी कविता में उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हैं ।
प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि ने समता, बंधुता, श्रम एवं देशप्रेम की भावना के महत्त्व को प्रतिपादित किया है ।

खोजबीन

भारत के सभी राज्यों की प्रमुख भाषाओं के नाम बताओ । उनसे संबंधित अधिक जानकारी पढ़ो ।

- पुस्तकालय से
- अंतरजाल से

धर्म अलग हों, जाति अलग हों, वर्ण अलग हों, भाषाएँ,
पर्वत, सागर तट, वन-मरुस्थल, मैदानों से हम आएँ,
फौजी वर्दी में हम सबसे पहले हिंदुस्तान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

हिंदुस्तान कि जिसकी मिट्टी में हम खेले, खाए हैं,
जिसकी रजकण हमको ममता, समता से अपनाए हैं,
कर्ज चुकाने हैं हमको उन रजकण के एहसान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

जिसकी पूजा में सदियों से श्रम के फूल चढ़ाए हैं,
जिसकी रक्षा में पुरखों ने अगणित शीश कटाए हैं,
हम रखवाले-पौरुषवाले उसके गौरव मान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

❑ उचित हाव-भाव के साथ कविता का सामूहिक, साभिनय पाठ करवाएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । किसी सैनिक/ महत्वपूर्ण व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए प्रोत्साहित करें । अन्य प्रयाणगीत/अभियान गीतों का संग्रह करवाएँ ।

सुनो तो जरा

किसी शहीद और उसके परिवार के बारे में सुनो : मुद्दे – जन्म तिथि, गाँव, शिक्षा, घटना ।

हम गिर जाएँ किंतु न गिरने देंगे देश निशान को,
हम मिट जाएँ किंतु न मिटने देंगे हिंदुस्तान को,
हम सबसे आगे रहते अवसर पर बलिदान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

जो वीरत्व–विवेक समर में हम सैनिक दिखलाएँगे,
उसकी गाथाएँ भारत के गाँव, नगर, घर गाएँगे,
अनगिन कंठों में गूँजेंगे बोल हमारे गान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
मरुस्थल = रेगिस्तान
रजकण = धूलिकण
एहसान = उपकार
पुरखे = पूर्वज
समर = युद्ध
मुहावरा
सीना तानकर चलना = गर्व से चलना

मेरी कलम से

शालेय प्रतिज्ञा का श्रुतलेखन करो और प्रतिज्ञा के मूल्यों का अपने व्यवहारों से सत्यापन करो ।

विचार मंथन

।। हम सब एक हैं ।।

अध्ययन कौशल

अब तक पढ़े हुए मुहावरों-कहावतों का वर्णक्रमानुसार संग्रह बनाओ और चर्चा करो ।

जरा सोचो ...... लिखो

यदि तुम सैनिक होते तो ......

L5D3T1

सदैव ध्यान में रखो

मानव सेवा ही सच्ची सेवा है ।

१. निम्न पंक्तियों का अर्थ लिखो :

(क) हिंदुस्तान -------------------- तान के ।

(ख) जो वीरत्व -------------------- तान के ।

२. देशप्रेम वाली चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

३. इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो ।

४. अपने देश के राष्ट्रीय प्रतीकों के नाम बताओ ।

भाषा की ओर

अर्थ के आधार पर वाक्य पढ़ो, समझो और उचित स्थान पर लिखो :

१. बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे ।

२. माला घर नहीं जाएगी ।

३. इसे हिमालय क्यों कहते हैं ?

४. सदैव सत्य के पथ पर चलो ।

५. वाह ! क्या बनावट है ताजमहल की !

६. कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा ।

७. खूब पढ़ो खूब बढ़ो ।

८. यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी ।

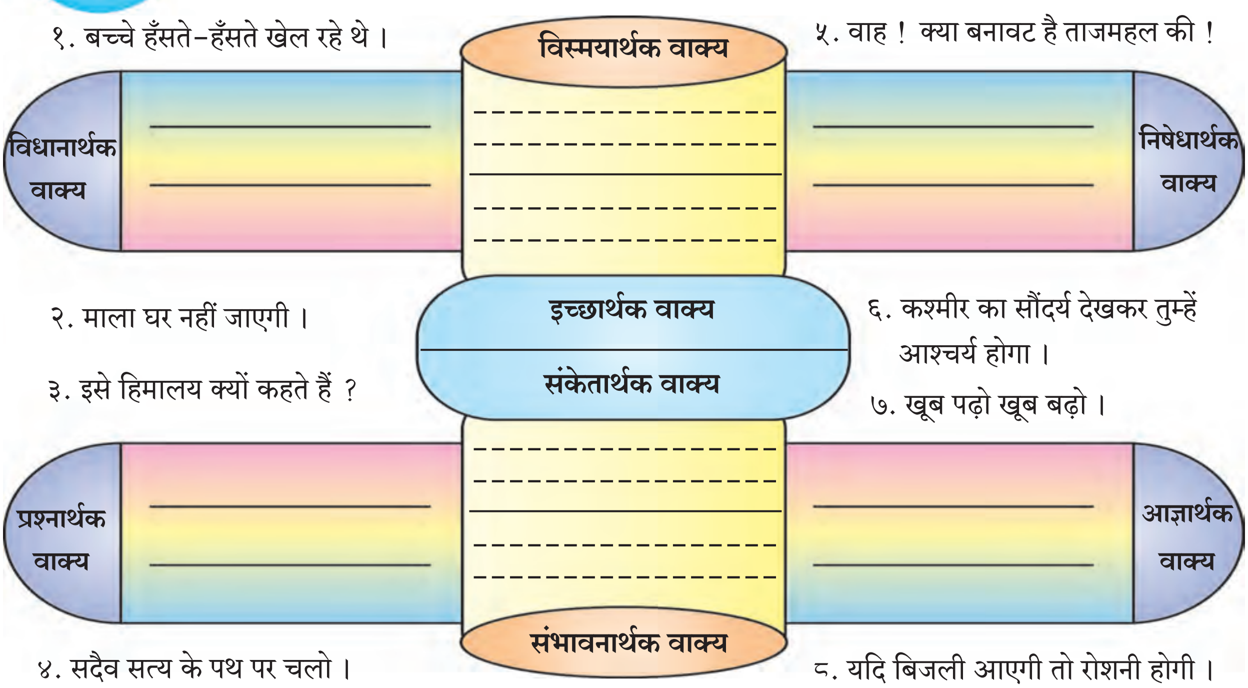

पहले वाक्य में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है । अतः यह वाक्य **विधानार्थक वाक्य** है । दूसरे वाक्य में आने का अभाव सूचित होता है क्योंकि इसमें **नहीं** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **निषेधार्थक वाक्य** है । तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछने का बोध होता है । इसके लिए **क्यों** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **प्रश्नार्थक वाक्य** है । चौथे वाक्य में आदेश दिया है । इसके लिए **चलो** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **आज्ञार्थक वाक्य** है । पाँचवें वाक्य में विस्मय-आश्चर्य का भाव प्रकट हुआ है । इसके लिए **वाह** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **विस्मयार्थक वाक्य** है । छठे वाक्य में संदेह या संभावना व्यक्त की गई है । इसके लिए **होगा** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संभावनार्थक वाक्य** है । सातवें वाक्य में इच्छा या आशीर्वाद व्यक्त किया गया है । इसके लिए **खूब पढ़ो, खूब बढ़ो** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **इच्छार्थक वाक्य** है । आठवें वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है । इसके लिए यदि, तो शब्दों का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संकेतार्थक वाक्य** है ।

अभ्यास-२

१. 'यातायात सप्ताह' तथा 'क्रीड़ा सप्ताह' पर पोस्टर बनाओ और कक्षा में प्रदर्शनी लगाओ। (सामग्री- चित्र, चार्ट पेपर, समाचार पत्र, पत्रिका की कतरनें/ उद्‌घोष आदि।)

२. दिए गए शब्द कार्ड देखो पढ़ो और उनकी सहायता से सरल, मिश्र तथा संयुक्त वाक्य बनाकर कक्षा में सुनाओ। (एक शब्द कार्ड का प्रयोग अनेक बार कर सकते हैं।)

रहा	घर	यह	सड़क	पानी	और
राष्ट्रीय	बाईं	उदाहरण	का	बरसना	के
ओर	वहीं	दाईं	भारत	जी	है
एकात्मता	हैं	कुआँ	उत्तम	देश	की

३. 'रमेश पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य को सभी काल में परिवर्तित करके भेदों सहित बताओ और लिखो।

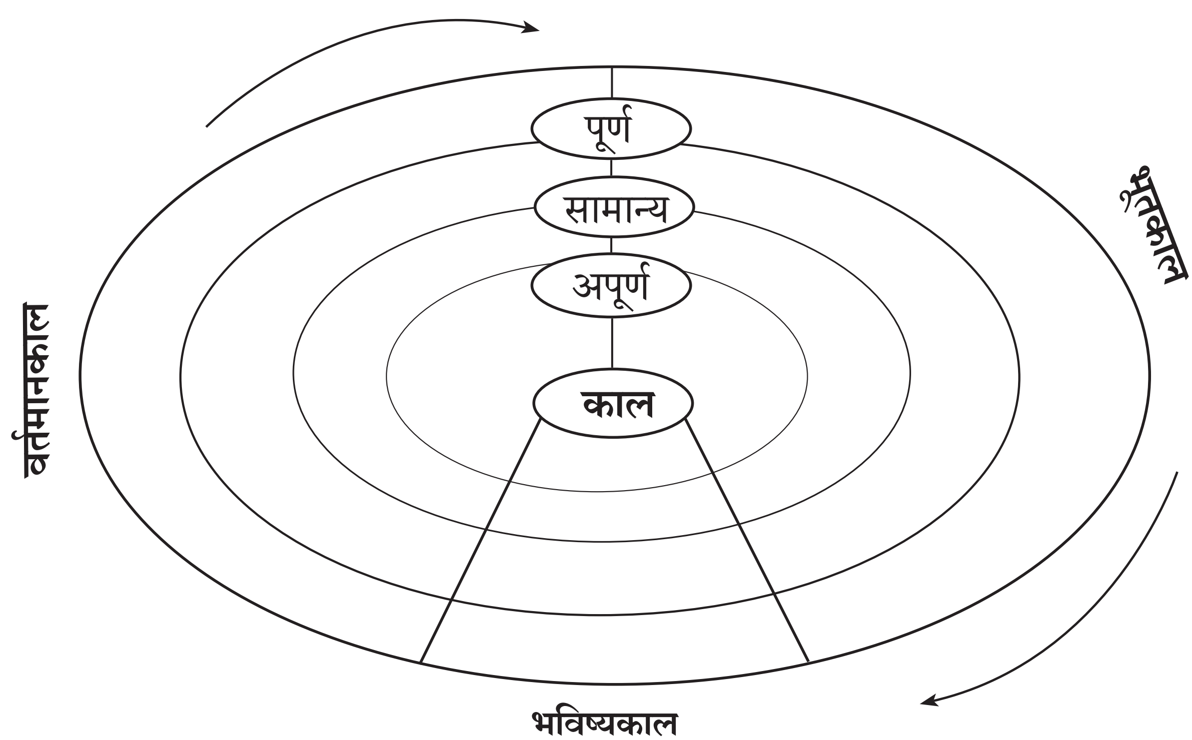

४. अपने आसपास दिखाई देने वाले सांकेतिक चिह्नों के चित्र बनाओ और उन्हें नामांकित करो।

अभ्यास–३

✻ चित्रकथा : चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ । अंतिम चित्र में दोनों ने एक–दूसरे से क्या कहा होगा ? लिखो :

❑ विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन–कौन–सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें अन्य चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी का आधुनिकीकरण करके लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

पुनरावर्तन – २

१. निम्नलिखित शब्दों में कौन–से पंचमाक्षर छिपे हुए हैं, सोचो और लिखो :

शब्द	पंचमाक्षर	उसी वर्ग के अन्य शब्द
पंकज	---------	--------, --------
चंचल	---------	--------, --------
ठंडा	---------	--------, --------
संत	---------	--------, --------
पेरांबूर	---------	--------, --------
पंछी	---------	--------, --------
बंदरगाह	---------	--------, --------
उमंग	---------	--------, --------

२. पाठ्यपुस्तक में आए संयुक्ताक्षरयुक्त तीन–तीन शब्द ढूँढ़ो । उनके संयुक्ताक्षर बनने के प्रकारानुसार वर्गीकरण करो । उन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

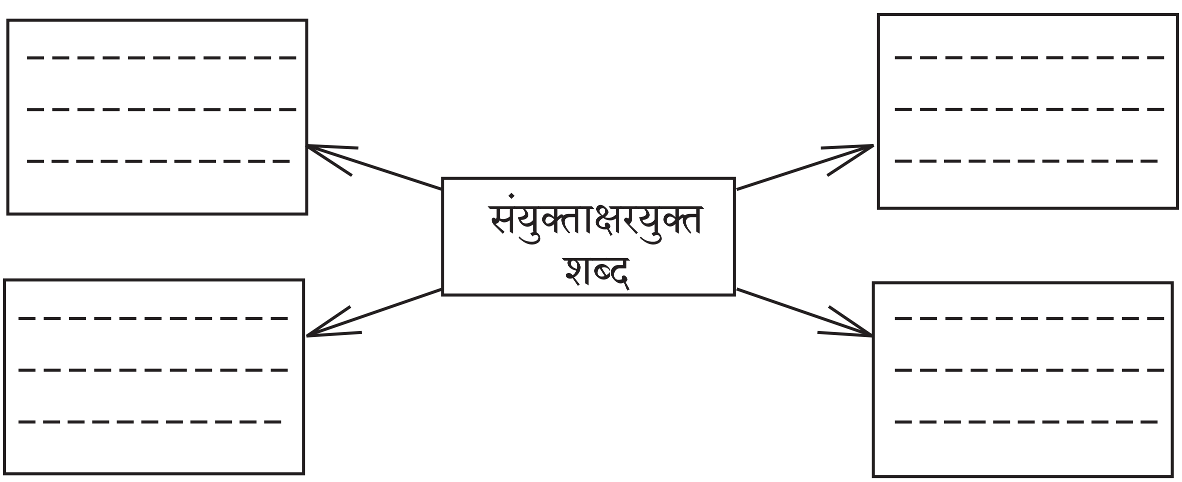

उपक्रम

प्रतिदिन किसी अपठित गद्यांश पर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार करो, जिनके उत्तर एक–एक वाक्य में हों ।

उपक्रम

प्रतिसप्ताह विद्यालय की विशेष उल्लेखनीय घटना सूचना पट्ट पर लिखो ।

उपक्रम

प्रत्येक सत्र में ग्राफिक्स, वर्ड आर्ट आदि की सहायता से एक–एक विषय पर विज्ञापन बनाओ ।

प्रकल्प

हिंदी की महिला कवयित्री संबंधी जानकारी पर आधारित व्यक्तिगत अथवा गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

विद्‌यार्थियों के पूर्वज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ यह पाठ्‌यपुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसे स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो विभागों में विभाजित करके इसका क्रम 'सरल से कठिन की ओर' रखा गया है। इस पुस्तक में विद्‌यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर भाषाई मूल कौशलों- श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के साथ-साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है। पुस्तक में स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

पाठ्‌यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी भाषा की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है। इसमें क्रमिक श्रेणीबद्‌ध एवं कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम दिए गए हैं। विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद, पत्र आदि विविध विषय दिए गए हैं। इनका उचित हाव-भाव, लय-ताल, आरोह-अवरोह के साथ अध्ययन-अनुभव देना आवश्यक है। विद्‌यार्थियों की स्वयं की अभिव्यक्ति, उनकी कल्पनाशीलता को बढ़ावा देने के लिए वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो...', 'खोजबीन', 'मैंने समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं। सृजनशीलता की अभिवृद्‌धि के लिए 'मेरी कलम से', 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन', तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है। इन कृतियों को भलीभाँति समझकर विद्‌यार्थियों तक पहुँचाना अपेक्षित है।

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, गूगल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । भाषा अध्ययन के लिए अधिक-से-अधिक पुस्तक एवं अन्य उदाहरणों द्‌वारा अभ्यास कराएँ । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्‌वारा संकल्पना तक ले जाकर विद्‌यार्थियों को पढ़ाना है ।

पूरकपठन सामग्री कहीं पाठ को पोषित करती है और कहीं उनके पठन संस्कृति को बढ़ावा देती हुई रुचि पैदा करती है । अत: पूरकपठन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

दैनिक जीवन से जोड़ते हुए भाषा और स्वाध्यायों के सहसंबंधों को स्थापित किया गया है । आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्वों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, स्वाध्यायों का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक, सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

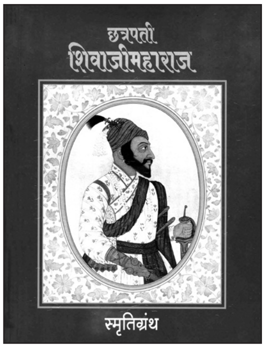

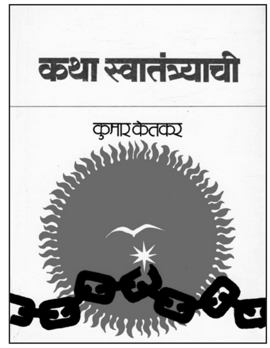

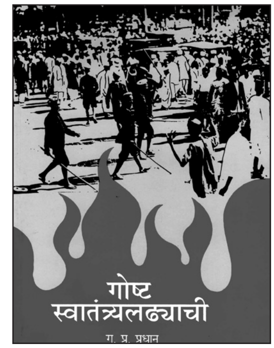

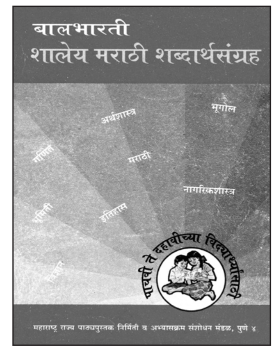

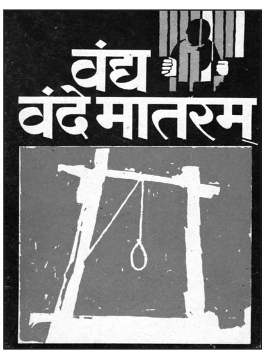

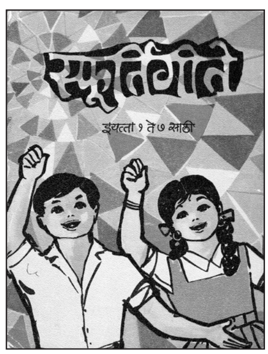

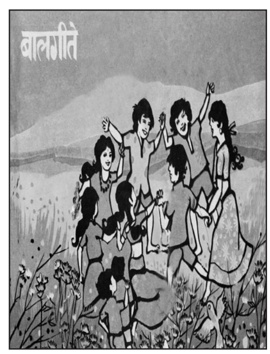

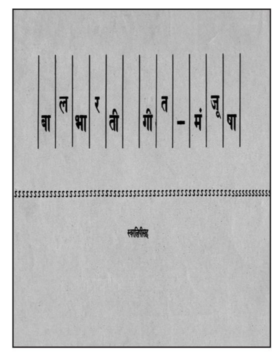

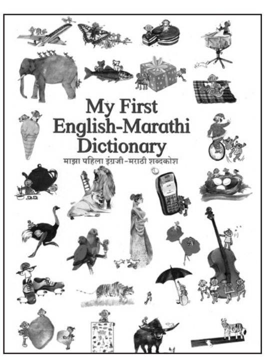

- पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पाठ्येत्तर प्रकाशने.
- नामवंत लेखक, कवी, विचारवंत यांच्या साहित्याचा समावेश.
- शालेय स्तरावर पूरक वाचनासाठी उपयुक्त.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुलभभारती इयत्ता ७ वी

₹ 28.00